तुलसी के लघुकाव्य में भक्ति विवेचन

श्री प्रेमसुख शर्मा
व्याख्याता–व्याकरण
श्री कल्याण राज्य आचार्य संस्कृत कॉलेज सीकर राजस्थान

तुलसी के लघु काव्य में भक्ति का महत्व कम नहीं हैं। तुलसी मूलतः भक्त थे अतः उनके सम्पूर्ण साहित्य में दर्शन भक्ति के अंग रूप में आया है। यही बात उनके लघु काव्यों के संदर्भ में कही जा सकती है।

भक्ति शब्द 'भज्' धातु में 'क्तिन्' प्रत्यय लगने से बना है जिसका सामान्य अर्थ है सेवा परन्तु इसी स्पष्ट व्याख्या शांडिल्य और नारद भक्ति सूत्रों में की गयी है। 'शांडिल्य भक्ति सूत्र' में भक्ति की व्याख्या करते हुए कहा गया है ''सा परानुरक्तिरीश्वरे''अर्थात् ईश्वर में अत्यन्त अनुरक्ति ही भक्ति है। इसी प्रकार 'नारद भक्ति सूत्र' में कहा गया है- ''सा त्वस्मिन् परम प्रेमरूपा। अमृत स्वरूपा ''। अर्थात् ईश्वर के प्रति प्रेम का नाम ही भक्ति है। वह अमृत स्वरूपा है।

वस्तुतः ईश्वर के प्रति प्रीति ही भक्ति है। भक्ति की व्याख्याओं से समान रूप से यह ज्ञात होता है कि भक्ति का स्थायी भाव प्रीति अथवा स्नेह है। इसी प्रीति की अभिव्यक्ति कई रूपों में होती है जैसे दास्य भाव से, सख्य भाव से, वात्सल्य भाव से, दाम्पत्य भाव से, शांत भाव से आदि। इन्हीं के आधार पर इसके कई प्रकार मान लिए गए हैं, जिनमें दास्य भक्ति, सख्य भक्ति, वात्सल्य भक्ति, माधुर्य भक्ति और शान्ता भक्ति मुख्य हैं।

दर्शन का सैद्धान्तिक निरूपण इन काव्यों में कही नहीं हुआ है। प्रसंगवश कुछ स्थलों पर ब्रह्म, जीव, जगत्, के आधार पर तुलसी की दार्शनिक गया है।

रामाज्ञा प्रश्न के शकुन शास्त्र होते हुए भी इसमें हमें शक्ति, शील व सौन्दर्य की उपासना के आधार पर टिकी हुई तुलसी की राम भक्ति के दर्शन सर्वत्र होते हैं।

तुलसी ने रामाज्ञा प्रश्न में सीता एवं लक्ष्मण से युक्त राम का सगुण चित्र अंकित किया है-

राम बाम दिसि जानकी, लखनु दाहिनी ओर।
ध्यान सकल कल्यानमय, सुरतरू तुलसी तोर ।।

यह दोहा तुलसी की भक्ति का आदर्श कहा जा सकता है। तुलसी मर्यादावादी कवि थे इसलिए उन्होंने केवल राम-सीता के ध्यान की बात नहीं कही अपितु राम-सीता के साथ लक्ष्मण के ध्यान को भी आवश्यक बतलाया। सीता और लक्ष्मण से समन्वित राम की इस त्रिमूर्ति के ध्यान पर बल देने का एक और भी कारण था। तुलसी ने राम के बाईं ओर सीता और दाहिनी ओर लक्ष्मण को चित्रित किया है। बायाँ अंग कोमलता एवं दायाँ अंग कठोरता का प्रतीक होता है। इस प्रकार सीता कोमलता का प्रतीक बन गई और लक्ष्मण कठोरता के। यदि तुलसी राम के साथ

सीता और लक्ष्मण का चित्रांकन न करते तो सम्भवतः कुसुम सरिस कोमल एवं कुलिस के सदृश कठोर राम का रूप पूर्ण न हो पाता। सीता के चित्रांकन का एक और कारण यह है कि उन्होंने राम के ध्यान को कल्पवृक्ष के समान चारो फल (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) का दाता कहा परन्तु यदि राम के साथ-साथ सीता का अंकन न करते तो सम्भवतः 'काम' की प्राप्ति न हो पाती। सीता एवं लक्ष्मण समन्वित राम के इस रूप की भक्ति तुलसी ने रामाज्ञा प्रश्न में स्थान-स्थान पर प्रतिपादित की है जैसे-

पंचबटी बट बिटप तर सीता लखन समेत।
सोहत तुलसीदास प्रभु सकल सुमंगल देत।।
तुलसी तुलसी राम सिय, सुमिरहु लखन समेत।
दिन दिन उदउ अनंद अब, सगुन सुमंगल देत।।

तुलसी मूलतः राम भक्त थे और उन्होंने राम भक्ति का प्रतिपादन भी किया परन्तु राम के सगुण साकार रूप की उपासना के साथ ही साथ उन्होंने राम के नाम स्मरण पर विशेष बल दिया। तुलसी का कहना है कि राम नाम स्मरण से सब प्रकार का मंगल सम्भव है-

राम नाम रति नाम गति राम नाम बिस्वास।
सुमिरत सुभ मंगल कुसल तुलसी तुलसीदास।।

इस दोहे में तुलसी ने राम नाम की महिमा प्रतिपादित की है। उनका विचार है कि सभी प्रकार की सफलताएँ प्राप्त करने के लिए राम नाम से प्रेम करना आवश्यक है। केवल राम नाम का ही भरोस होना चाहिए और उसी में विश्वास होना चाहिए। इस प्रकार तुलसी के इस दोहे के माध्यम से राम भक्ति की एक नई विशेषता सामने आती है कि राम की भक्ति प्राप्त करने के लिए उनके नाम के साथ प्रीति, प्रतीत एवं विश्वास होना आवश्यक है।

राम-नाम की महिमा प्रतिपादित करने के लिए तुलसी ने उसे कलियुग में कल्पवृक्ष सदृश कहा-

राम नाम कलि कामतरू, सकल सुमंगल कंद।
सुमिरत करतल सिद्धि जग, पग पग परमानंद।।

नाम भक्ति की महिमा बताने के लिए ऐसे कई और रूपक बाँधे गए हैं जैसे-

राम नाम कलि कामतरू राम भगति सुरधेनु।
सगुन सुमंगल मूल जग गुरू पद पंकज रेनु।।

इतना ही नहीं तुलसी तो राम के नाम को स्वयं राम से अधिक प्रभावशाली मानते हैं। तभी तो वे स्पष्ट शब्दों में कहते हैं-

राम नाम पर राम ते प्रीति प्रतीति भरोस।
सो तुलसी सुमिरत सकल सगुन सुमंगल कोस।

नाम स्मरण के अतिरिक्ति तुलसी ने रामाज्ञा प्रश्न में अनेक स्थानों पर राम-नाम-जप का भी परामर्श दिया।

पय नहाइ फल खाइ जपु राम नाम षट मास।
सगुन सुमंगल सिद्धि सब करतल तुलसीदास।।

राम के नाम-जप से सभी प्रकार की सिद्धियाँ तो सहज करतल गत होती ही हैं, साथ ही वह जापक को मनवांछित फल दोने वाला भी है। नाम-जप से जापक को अभिमत फल मिलता है।

तुलसी द्वारा प्रतिपादित इस नाम भक्ति का विशेष महत्त्व है। भागवत पुराण एवं अध्यात्म रामायण दोनों की नवधा भक्ति में क्रमशः नाम स्मरण और मंत्र (राम नाम) जाप को विशेष महत्त्व दिया है। साध्यारूपा राम भक्ति को प्राप्त करने के लिए यही मुख्य साधन हैं क्योंकि ये अर्चन पूजन आदि साधनों की अपेक्षा सहज एवं सर्वसुलभ हैं।

राम भक्ति एवं नाम भक्ति प्रतिपादित करने वाले उपर्युक्त दोहों के अतिरक्ति इस काव्य में भक्ति सम्बन्धी कुछ अन्य दोहे भी मिलते हैं जिनमें दशरथ, कौशल्या, सुमित्रा, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न, हनुमान आदि की महिमा प्रतिपादित हुई हैं और उनकी भक्ति की गई है।

वस्तुतः भक्ति सम्बन्धी ये दोहे भी राम भक्ति से ही सम्बद्ध हैं और राम भक्ति की प्राप्ति में ही सहायक हैं। भक्ति सम्बन्धी इन दोहों की निबन्धता दो कारणों से की गई प्रतीत होती है - एक यह कि अविरल हरि भक्ति में आराध्य को सभी वस्तुओं एवं उसके कृपा पात्रों से प्रेम हो जाता है। तुलसी के आराध्य राम के हनुमान, भरत, लक्ष्मण, आदि विशेष कृपा पात्र हैं। आराध्य के कृपा पात्रों से भक्त का प्रेम भी स्वाभाविक ही है इसलिए इनकी भक्ति भी की गई है। दूसरे राम के विशेष कृपा पात्र होने से इनका प्रभाव राम पर सबसे अधिक पड़ता है और इस प्रकार ये राम भक्ति प्राप्त कराने में सबसे अधिक समर्थ हैं। तुलसी हर तरह से राम भक्ति प्राप्त करना चाहते थे इसलिए उन्होंने भरतादि की वन्दना एवं भक्ति की।

रामेतर पात्रों की भक्ति एवं उनकी स्तुति से सम्बन्धित दोहों की निबन्धना का एक और कारण यह भी है कि साध्यरूपा भक्ति में कृपाजन्य भक्ति को एक साधन माना गया है। राम की भक्ति इनकी (हनुमान, भरतादि) कृपा से प्राप्त होती है। इस प्रकार की भक्ति पुरूषाकार कृपा के अन्तर्गत आती है। राम के पार्षदों में हनुमान, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न मुख्य हैं। उनकी कृपा भी राम भक्ति का साधन हैं। अतएव तुलसी उनकी कृपा के हेतु भी उनकी वन्दना करते हैं। यह ध्यातव्य है कि ये राम कृपा के साधन तो हैं ही साथ ही साथ स्वतंत्र रूप से तुलसी के आराध्य भी हैं।

उपर्युक्त विवेचन से हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि तुलसी को हर प्रकार से राम भक्ति प्रतिपादित करना ही अभीष्ट था। उनकी मान्यता थी कि जीवन में सभी प्रकार की सफलताएँ राम भक्ति से प्राप्त हो सकती हैं। राम भक्ति के बिना स्वप्न में भी सुख नहीं मिल सकता -

प्रीति प्रतीति न राम पद, बड़ी आस बड़ लोभ।
नहिं सपनेहुँ संतोष सुख, जहाँ तहाँ मन छोभ।।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

शांडिल्य भक्ति सूत्र अनुवादक - रामनारायण दत्त शास्त्री . प्रथम अध्याय 2

नारद भक्ति सूत्र (प्रेम दर्षन) हनुमान प्रसाद पोद्दार -सूत्र (2-3)

रामाज्ञा प्रश्न (7-3-7)

रामाज्ञा प्रश्न (3-7)

रामाज्ञा प्रश्न (7-5-7)

रामाज्ञा प्रश्न (6-4-7)

रामाज्ञा प्रश्न (3-4-7)

रामाज्ञा प्रश्न (3-4-4)

रामाज्ञा प्रश्न (5-1-4)

रामाज्ञा प्रश्न (2-5-7)

रामाज्ञा प्रश्न (5-4-1)